चलो कश्मीर...ज़मीन ख़रीदेंगे, बंगला बनाएंगे, लड़कियों से शादी करेंगे...और क्या

नासिरूद्दीन

संवाद और सूचना का तंत्र और जाल हो तो ऐसा हो, वरना न हो. सोमवार 5 अगस्त को राज्यसभा में कश्मीर पर चर्चा अभी शुरू ही हुई थी कि एक ख़ास तरह का मैसेज घूमने लगा.

'मेरे कुंवारे दोस्तों करो तैयारी अब कश्मीर में हो सकती हैं ससुराल तुम्हारी' और कुछ तो तारीख़ भी बताने लगे '15 अगस्त के बाद कश्मीर में हो सकती है ससुराल तुम्हारी.'

किसी को अपने अनब्याहे होने पर ख़ुशी हो रही थी, 'अच्छा किया अभी तक शादी नहीं किया था अब तो लगता है कश्मीर में ससुराल होगा.' तो किसी अनब्याहे ने ईश्वर को याद किया, 'आज ईश्वर की लीला समझ में आ गई/ उसने मेरी शादी क्यों नही होने दी/ वो जो करता है हमेशा अच्छे के लिए ही करता है/ कश्मीर में ससुराल.'

कोई तो इतना ख़ुश हुआ कि जयघोष करने लगा, 'जम्मू कश्मीर में हमारा भी ससुराल होगा/ चलो हिंदुस्तानियों जम्मू-कश्मीर में बारात लेकर चलते हैं/ कौन-कौन चल रहा है मेरे साथ/ जय श्री राम.' तब तक एक भाई को जोश आ गया, 'कश्मीरी लड़कियों करो तैयारी, आ रहे हैं भगवाधारी.'

कश्मीरी प्लॉट के मायने क्या?

ऐसे संदेशों के साथ कई लड़कियों की ग्रुप तस्वीरें थी तो हिस्सा भी लगने लगा, 'राइट वाली मेरी.' तो कोई कहने लगा, 'ये नीले घेरे वाला कश्मीरी प्लॉट मेरा है/ बाक़ी आप अपना देख लो.' तो कोई टपका, 'ये बीच वाला कश्मीरी प्लॉट मेरा है बाक़ी अपना ख़ुद देख लो.' (वैसे, अगर लड़कियों की ग्रुप फोटो के साथ यह कमेंट हो तो कश्मीरी प्लॉट का मायने क्या हुआ?)

एक दो तो कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती की बेटी के लिए लड़के तलाश रहे हैं तो किसी ने अपने मित्र के लिए जेएनयू की स्टूडेंट लीडर रहीं शेहला राशिद का नाम सुझाया है. इनकी तस्वीर साझा की है. एक भाई ने तो इनाम का एलान कर दिया,' जो हिन्दू भाई एक कश्मीरी लड़की के साथ शादी करेगा उसे मैं 50 हज़ार नग़द दूंगा.'

ख़ैर! इन सबके बीच किसी को अफ़सोस भी है, 'काश शादी के लिए दो तीन साल रुका होता/ वरना आज ससुराल कश्मीर होता.'

कश्मीर में सरकार ने क्या किया और कैसे किया, इसे संवैधानिक/ कानूनी रूप से इसे इस तरह से समझिये

धारा 370 (1) भारत के राष्ट्रपति को जम्मू कश्मीर सरकार के अनुमोदन से , भारत के संविधान में जम्मू कश्मीर से सम्बंधित प्रावधानों में संशोधन की अनुमति देती है।

धारा 370 (3) कहती है की 370 को जम्मू कश्मीर की संविधान सभा के द्वारा ही संशोधित किया जा सकता है। जो हुआ : राष्ट्रपति को 370 (1) में प्रदत्त शक्तिओं के आधार पर राष्ट्रपति द्वारा सर्वप्रथम C O 272 लाया गया , जिसके द्वारा संविधान के एक अन्य प्रावधान 367 में, जिसमे अभी तक 3 ही क्लॉज़ थे , एक नया क्लॉज़ जोड़ा गया , जिसके अनुसार , धारा 370 (3) में जिस 'संविधान सभा' की बात है उसे , 'विधान सभा' से रिप्लेस कर दिया गया. अब चूंकि धारा 370 (1) में यह कहा है कि 'जम्मू कश्मीर की सरकार की अनुमति से', चूंकि वहां विधान सभा निलंबित है, अत: यह संशोधन लाने के लिए राज्यपाल से अनुमति ली गयी। अब C O 272, द्वारा 367 में जो संशोधन किया गया उसमे प्राप्त शक्तिओं के आधार पर, statuary resolution राज्य सभा में लाया गया, जिसमें धारा 370 को लगभग ख़त्म कर दिया गया है।

पिछले दो-तीन दिनों में व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर, टिक-टॉक, ऐसे संदेशों से भरे पड़े हैं. मगर इन संदेशों के साथ क्या कुछ और मायने गुँथा है? क्या ये संदेश कुछ और कहने की भी कोशिश कर रहे हैं?

एक-दो बात और ग़ौर करने की है. इन सब संदेशों के वाक्य की बुनावट बता रही है कि यह सब मर्द, मर्दों से कह रहे हैं. इन संदेशों में कश्मीरी लड़कियों से शादी की लालसा तो है. साथ ही वहाँ ज़मीन ख़रीदने, बस जाने की ख्वाहिश भी है.

स्त्री युद्ध जीतने का इनाम है क्या!

इतिहास हमें बताता है कि क़बीलाई दौर और मध्यकाल के सामंतवादी ज़माने में साम्राज्य विस्तार के लिए जंग होती थी. विजेता हारे हुए इलाक़े की ज़मीन और सम्पत्तियों पर क़ब्ज़ा कर लेते थे. बहुत से हमलावर, महिलाओं को भी जीती हुई सम्पत्तियों में मानते थे. इसलिए वे महिलाओं को अपने क़ब्ज़े में ले लेते थे.

मर्दाना सोच वाला समाज, ज़माने से महिलाओं को किसी समाज, समूह, जाति, सम्प्रदाय, देश की इज़्ज़त के रूप में देखता रहा है. इसीलिए देशों के बीच युद्ध हो या जातीय या साम्प्रदायिक हिंसा, जीतने के लिए एक जंग स्त्रियों की देह पर भी लड़ी जाती रही है. यह हमारे समय में भी हुआ है और हो रहा है. हम तो हमेशा से यही जानते रहे और किताबों में भी पढ़ाया जाता रहा है कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है. हमारी बात का सिरा कश्मीर से शुरू होकर कन्याकुमारी पर ख़त्म होता रहा है. फिर 5-6 तारीख़ के दौरान ऐसा क्या हुआ कि कुछ लोगों को लगने लगा कि कश्मीर अब जाकर हमारा है? अब जाकर जीत मिली है? वे विजेता हैं? अपने ही इलाक़े पर विजेता? अपने ही लोगों पर विजेता?

जिस तरह पुराने ज़माने के विजेताओं को ज़र-ज़मीन पर क़ब्जे की फिक्र रहती थी, वैसे ही सभी मोटरी-गठरी उठाये, जम्मू-कश्मीर-लद्दाख़ में सम्पत्ति अर्जित करने की ख्वाहिश ज़ाहिर करने लगे. सोशल मीडिया पर पसरे संदेश, मीम, बातें तो यहीं बता रही हैं.

तो क्या हमें वहाँ के लोग नहीं, जम्मू-कश्मीर की सम्पत्ति की चाहत है? ऐसी ही चाहत वाले सम्पत्ति में स्त्री को भी शामिल करते हैं. क्योंकि इनमें से ज्यादातर अपने घर-समाज की स्त्रियों को सम्पत्ति की ही तरह देखने के आदी रहे हैं.

कहने वाले कह सकते हैं कि इन मैसेज को इतनी गंभीरता से लेने की ज़रूरत नहीं है. बात तो सही है. अगर इक्का दुक्का होतीं तो शायद हल्की-फुल्की चर्चा ही होती. मगर ऐसे संदेशों की तो बाढ़ है. यक़ीन न हो तो किसी भी जगह सर्च कर लें. हालाँकि, इनकी जड़ें तलाशनी हो तो इधर-उधर भी नज़र डालनी पड़ेगी.

मोदी : काला जादू दिखाने की कह के मजमा जोड़ के चमत्कारी अँगूठी बेचने वाला मदारी

अजातशत्रु

आपने रास्ते में मजमा लगाते खुद को जादूगर कहने वाले मदारी देखे होंगे। बच्चे को हवा में उड़ाने, आदमी को बीच में से काट कर दो टुकड़े कर के फिर जोड़ देने जैसे जादू दिखाने का दावा कर के मजमा जोड़ने वाले ये मदारी आख़िर में ऐसा कुछ न कर के 10 रुपए में चमत्कारी अँगूठी बेच कर चलते बनते हैं। यानी वादा आपके मनोरंजन का, आपको खुशी देने का और काम ठगी का, आपको मूर्ख बना कर आपकी जेब से पैसे निकालने का। ऐसा ही एक मदारी आजकल इस देश के प्रधानमंत्री की कुर्सी पर विराजमान है।

इस मदारी ने अपना पहला मजमा जोड़ा 2014 में सफाई के नाम पर। देश को हम चार सालों में साफ कर देंगे, कह के जगह-जगह झाड़ू लेकर नेताओं ने फोटो खिंचवाए, स्कूली बच्चों से रैलियाँ निकलवाई गईं, 'मन की बात' की गई। यानी वास्तव में सफाई या कम से कम उसकी योजना बनाने के काम को छोड़ कर सब कुछ किया गया। सफाई के नाम पर करोड़ों रुपए डकार गये और उधर अडानी को हज़ारों करोड़ रुपए का लोन दिलवा दिया-ऑस्ट्रेलिया में खदान के नाम पर। ना तो आज तक वहाँ खदान चली और ना ही लोन वापस किया गया। दूसरी तरफ, गंगा सफाई के नाम पर भी हज़ारों करोड़ रुपए डकार गये और अब गंगा सफाई अभियान भी बंद। जिस तरह मदारी एक जगह अँगूठी बेच, माल समेट दूसरी जगह मजमा जोड़ लेता है, ठीक उसी तरह। सबसे शर्म की बात ये है कि सफाई के इतने पाखंड के बावजूद सफाई कर्मचारियों को कुछ नहीं मिला ड्रू ना तनखा बढ़ी, ना सुविधाएँ, ना सुरक्षा। वो भी यूं ही गटर में सफाई के लिये उतरते रहे और मरते रहे। मोदी जी सफाई के जादू की कह के अँगूठी बेच गये - हमारे पैसे अडानी को थमा गये।

फिर जब यू.पी. के इलेक्शन आये तो इन्होंने दूसरा मजमा जोड़ा – नोटबंदी का जादू दिखाने का। लोगों का काला धन बाहर आ जायेगा, नकली नोट बनने बंद हो जायेंगे, आतंकवादियों की कमर टूट जायेगी, माओवादी भीख मांगेंगे आदि जादू दिखाने की बात की गई। लेकिन वास्तव में सारा काला धन इनकी पार्टी के पास आ गया और इसी कारण ये यू.पी. का इलेक्शन जीत गये, जिसका नतीजा अब वहाँ की गद्दी पर भी एक छोटा मदारी बैठा है जो सिर्फ धार्मिक तमाशे दिखाता है – गाय सुरक्षा के नाम पर आदमी को कैसे मारा जा सकता है आदि। यद्यपि इस मजमे में ये यू.पी. का इलेक्शन जीतने की अँगूठी तो बेच गये, लेकिन उसके कई और परिणामों की इन्होंने भी कल्पना नहीं की थी, जिसे हम आज तक भुगत रहे हैं, जैसे देश की अर्थव्यवस्था में लगातार मंदी, बेरोजगारी आदि। तीसरे मजमे में इन्होंने जीएसटी का जादू दिखाया था जो अभी जारी है। उसमें अब तक भी ये कोई ठीक सिस्टम इजाद नहीं कर पाये हैं।

चौथा मजमा लोकसभा चुनाव 2019 के समय इन्होंने लगाया था। तब जो इन्होंने पुलवामा और सर्जिकल स्ट्राइक का जादू दिखाया था, उसमें ना सिर्फ ये 'राफेल' की अँगूठी बेच गये, बल्कि चुनाव में 303 सीटें बोनस के रूप में ले गये। जवान मरे ग़रीब-गुरबों के और माल ले गया मदारी। इस बार के जादू में तो इन्होंने ऐसी सम्मोहिनी विद्या का प्रयोग किया कि जिनकी जेबों से पैसा निकला, वो भी खुश और जिनके पुत्र, सगे-संबंधी मरे, वो भी इन्हीं को तारणहार समझ रहे थे। वैसे अपने मजमे के बीच-बीच में ये एक मंजे हुए मदारी की तरह कुछ चुटकुले भी छोड़ता रहता है। जैसे मन की बात कार्यक्रम में छात्रों को परीक्षा के लिये गुर बताना। अब कोई वहाँ से सवाल तो पूछ नहीं सकता कि मदारी जी, आपने कौन-सी परीक्षा दी है, कौन-सी क्लास पास किये हो। वैसे किसी ने यूनिवर्सिटी से इनकी डिग्री के बारे में पूछ लिया तो या तो यूनिवर्सिटी पर इन्होंने ऐसी 'मूठकरणी' चलाई कि उनकी जबान ही बंद हो गई। वो आज तक जवाब ही नहीं दे पाये। लगता है कि फोके मदारी नहीं, एकाध विद्या तो इन्हें आती ही है।

पाँचवां मजमा इन्होंने लोकसभा चुनाव 2019 के तुरंत बाद लगाया। इसमें इन्होंने पानी बचाओ, पेड़ लगाओ के जादुई मंत्र से लोगों को मोहित किया और चुपचाप पाँच एयरपोर्ट और एक रेल बेच दी।

लेकिन छठा और आखिरी मजमा जो अभी जारी है, वो धारा 370 का है। मदारी ने इधर जादू की छड़ी घुमाई और उधर बत्तख गायब, उसकी जगह एक चूजा और एक अंडा आ गया। चूजे को बड़ा होने पर बत्तख का भी नाम दिया जा सकता है, लेकिन अंडा बताते हैं कि हमेशा अंडा ही रहेगा।

इधर कुछ लोग मदारी के इस तमाशे का विरोध कर रहे हैं कि इसने बत्तख को हमेशा के लिये गायब कर दिया। ये अन्याय है, अलोकतांत्रिक है, असंवैधानिक है। हुआ करे। ज्यादातर जनता तो तालियाँ पीट रही है कि अब एक चूजा और एक अंडा, दो-दो चीजें खाने को मिलेंगी। इसी बीच, मदारी कौन-कौन सी अँगूठी बेचेगा, किस-किस की जेब से पैसे साफ कर जायेगा, यह राज़ अभी नहीं खुला है। इस बीच लोग ताली बजा रहे हैं और खुश हो रहे हैं। ये उन लोगों को गरिया रहे हैं, धमका रहे हैं जो मदारी के

खेल पर खुश नहीं हो रहे हैं। खेल अभी जारी है और कम से कम हरियाणा, महाराष्ट्र और झारखंड के चुनाव तक जारी रहेगा, ऐसा बताया जाता है। तब तक अपनी जेबें संभाल कर रखिये और अपनी बुद्धि को भी, क्योंकि चुनाव के समय ये मदारी वशीकरण मंत्र का सबसे ज्यादा प्रयोग करता है।

इस बीच कश्मीर में लगा कर्फ्यू जारी है। इंटरनेट, फोन, टीवी, सब सेवायें बंद हैं। बीजेपी को छोड़ कर लगभग सभी पार्टियों के बड़े नेता और कई अन्य छोटे नेता यानी सारे देशद्रोही मिला कर लगभग 300 लोग जेलों में बंद हैं। आर.एस.एस. और बीजेपी के नेता फेसबुक और व्हाट्सअप पर मैसेज कर रहे हैं – ये समय कश्मीरियों के साथ खड़े होने और उन्हें गले लगाने का है। प्रधानमंत्री ने दिलेरी दिखाते हुये एक साहसिक कदम उठाया है। हम उनकी प्रशंसा करते हैं और बधाई देते हैं। कृपया शांति बनाये रखें।

मैं कश्मीरी भाइयों-हिंदू हों या मुसलमान, उनसे गले मिलना चाहता हूँ। उनके बत्तख से चूजा बना दिये जाने पर दुख प्रकट करना चाहता हूँ। लेकिन वहाँ सब कुछ बंद है और देश जश्न में डूबा हुआ है। लगता है, मदारी ने अपना सम्मोहिनी मंत्र फूंक दिया है और सारे देश को इंसान से चूहा बना दिया है – बुद्धिहीन मूर्ख चूहा। शायद इसके बाद मदारी शांतिपाठ करवायेगा – इस देश की आत्मा की शांति के लिये।